

डॉ. मे यंग, बाइबिल विलाप का परिचय

सत्र 1

यह डॉ. मे यंग हैं, जो बाइबिल के विलाप के परिचय पर अपने व्याख्यान में बोल रही हैं, सत्र 1।

नमस्ते, मेरा नाम मे यंग है, और मैं यहाँ टेलर विश्वविद्यालय में बाइबिल अध्ययन की एसोसिएट प्रोफेसर हूँ। मैं पुराने नियम के साथ-साथ ऐतिहासिक ईसाई विश्वास पर कुछ पाठ्यक्रम भी पढ़ाती हूँ।

वास्तव में बाइबिल के विलाप के विषय पर बात करना चाहूँगा। और मेरे पास कुछ पाठ होंगे जो विशेष रूप से इस विषय से निपटेंगे। लेकिन मैं यहाँ अपना समय सिर्फ़ कुछ चिंतन के साथ शुरू करना चाहूँगा, और आपके लिए एक सवाल है, आप दर्द और पीड़ा को कैसे संभालते हैं? इसलिए, जब हम सोचते हैं कि हम एक टूटी हुई दुनिया में कैसे रहते हैं, तो हम हर समय समाचारों में पीड़ा और त्रासदियों और हमारे चारों ओर हो रही चीज़ों के बारे में देखते और सुनते हैं।

हम अपने द्वारा अनुभव किए जाने वाले दर्द, न्याय, अवसाद या संदेह से कैसे निपटते हैं? और मैं चाहता हूँ कि आप इस बारे में सोचने के लिए कुछ क्षण लें, आप जानते हैं, आप व्यक्तिगत रूप से इन विषयों के बारे में कैसे सोचते हैं और आप इसके साथ क्या करते हैं? और जैसा कि मैं सोचता हूँ, जैसा कि आप इसके बारे में सोचते हैं, मैं बस कुछ संभावित तरीकों को सामने लाना चाहता हूँ जिनके द्वारा लोगों ने अतीत में इसका उत्तर दिया है या इसके बारे में सोचा है, और शायद वे आपके लिए भी परिचित हैं। और इसलिए कभी-कभी जब लोग हमारे आस-पास हो रहे दर्द या अन्याय या चीज़ों के बारे में सोच रहे होते हैं, तो शायद कुछ लोग, आप जानते हैं, इसे अनदेखा कर रहे होते हैं और उम्मीद कर रहे होते हैं कि यह दूर हो जाएगा। यह कुछ ऐसा हो सकता है, आप जानते हैं, इसलिए यह बहुत भारी है।

इसलिए, ऐसा करना आसान है। दूसरा विकल्प यह हो सकता है कि हम इसे किसी मित्र के साथ साझा करें, इस बारे में बात करें और इस पर विचार करें। या फिर हम वास्तव में अपना ध्यान भटका सकते हैं या खुद को व्यस्त रख सकते हैं।

और इसलिए, हमें अपने आस-पास हो रही चीज़ों की वास्तविकता का सामना करने की ज़रूरत नहीं है। और इसलिए, हम बस व्यस्त रहते हैं ताकि हमारे पास बैठकर इन चीज़ों के बारे में सोचने का समय ही न हो। या हम यह भी दिखावा कर सकते हैं कि सब कुछ ठीक है।

तो यहाँ इसे अनदेखा करने के लिए कुछ हद तक, बल्कि वास्तव में दिखावा करना है कि चीज़ें वास्तव में ठीक चल रही हैं। या दूसरा विकल्प इसे सुन्न करने की कोशिश करना है। और यह शायद आत्म-विनाशकारी आदतों के माध्यम से ऐसा करने का एक बहुत ही अस्वास्थ्यकर तरीका है।

आप जानते हैं, कभी-कभी लोग शराब या ड्रग्स या किसी अन्य तरीके से दर्द को कम करने की कोशिश करते हैं, जो कि उस दर्द से निपटने के लिए चारों ओर होता है। इसलिए, जब हम इस बारे में सोचते हैं, तो ये क्रियाएं या, आप जानते हैं, ये संभावित निष्क्रियताएं अस्थायी राहत ला सकती हैं। और इसलिए, लेकिन मुझे लगता है कि एक बेहतर तरीका होना चाहिए और एक बेहतर तरीका होना चाहिए और हम इससे कैसे निपटें, क्योंकि हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो दुख से भरी है, कि हम परीक्षणों का सामना करते हैं, कि ऐसी चीजें हैं जो हमारे चारों ओर इस तरह से हो रही हैं।

और इसका एक हिस्सा आत्मचिंतन है, जिसके कारण मैंने वॉकिंग विद गॉड थ्रू द वैली नामक पुस्तक लिखने का फैसला किया। और यह इंटरवर्सिटी एकेडमिक प्रेस द्वारा प्रकाशित की गई है। और मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि जब मैं चर्च में बड़ा हो रहा था, तो मैंने इस विषय पर बहुत ज़्यादा नहीं सुना था।

जब हम विलाप के विषय के बारे में सोचते हैं, तो शुक्र है कि विलाप का विषय सबसे आगे लाया गया है, शायद उन चीजों के कारण जिनका हम इस दुनिया में सामना कर रहे हैं, एक महामारी से निपटना, यहां तक कि आगे भी, और युद्ध और ऐसी चीजें जो अभी दुनिया में हो रही हैं। इसलिए, मैं जो करना चाहता हूं वह हमारी बातचीत में, हमारे पाठ में, बाइबिल के विलाप के बारे में थोड़ा और सीखना है। आप जानते हैं, यह क्या है, और इस बारे में थोड़ी बात करना कि यह शायद उससे थोड़ा अलग है जिसके बारे में हम सामान्य रूप से विलाप के विषय के बारे में सोचते हैं।

तो, बाइबल आधारित विलाप क्या है, और यह क्यों महत्वपूर्ण है? और सबसे पहले, मैं यहाँ यह कहना चाहता हूँ कि मेरा मानना है कि बाइबल आधारित विलाप की अवधारणा और अभ्यास केवल दुख की वास्तविकता को व्यक्त करने की सामान्य समझ से परे है। इसलिए यहाँ, जब हम विलाप की सामान्य धारणा के बारे में सोचते हैं, तो हम केवल दुख की वास्तविकता को व्यक्त करने के बारे में सोचते हैं। हम केवल दुखी होने या, आप जानते हैं, दर्द से निपटने या यह कैसे हुआ, के बारे में सोचते हैं? लेकिन मुझे लगता है कि बाइबल आधारित विलाप वास्तव में थोड़ा अलग है क्योंकि यह विश्वास का एक कार्य है।

यह आस्था का एक ऐसा कार्य है जिसमें हम अपने दुख, अन्याय और क्रोध के साथ ईमानदारी से ईश्वर को पुकारते हैं। और यहाँ यह ईश्वर को हमारे संघर्ष में आमंत्रित करता है। तो यहाँ यह वास्तव में ईश्वर की ओर मुड़ना है, उसे हमारे संघर्ष में आमंत्रित करना है और हमें लचीला व्यक्ति बनने में मदद करना है।

और इसलिए यहाँ हमारे विलाप के माध्यम से, हम वास्तव में इस तरह से अपने दिलों में अधिक लचीलापन और उपचार की ओर अग्रसर हैं। और इसलिए यह केवल हमारे दर्द और पीड़ा को व्यक्त करने या दुखी महसूस करने जैसा नहीं है। यह वास्तव में विश्वास का एक कार्य है जो हमें उस अर्थ में एक बड़ी आशा की ओर ले जाएगा।

और इसलिए हम शास्त्रों में पाते हैं कि शास्त्र हमें विलाप के उदाहरण देते हैं। इसलिए, ऐसे समय के लिए बहुत सारी विलाप प्रार्थनाएँ हैं जब हम संदेह या अन्याय या दर्द या कठिनाइयों का सामना करते हैं जो इस तरह से हमारे चारों ओर हैं। इसलिए, कुछ विलाप प्रार्थनाएँ जो हम पा सकते हैं वे विशेष रूप से भजन संहिता की पुस्तक में हैं।

वास्तव में, भजन संहिता की पुस्तक में, आप पाते हैं कि भजन संहिता का एक तिहाई भाग विलाप के भजन हैं जो उस तरह की शैली में पाए जाते हैं। और हम इसके बारे में थोड़ी देर में बात करेंगे। अथ्यूब की पुस्तक में भी विलाप के भाव हैं क्योंकि अथ्यूब अपनी व्यक्तिगत स्थिति में उसके साथ जो कुछ हुआ है, उसके बारे में विलाप करता है।

वास्तव में भविष्यवक्ताओं के पास भी बहुत सारे विलाप हैं। और इसलिए, चारों ओर फैले अन्याय, पाप, लोगों, राष्ट्रों के लिए विलाप जो इस्राएल और यहूदा के राष्ट्र के विरुद्ध हैं। और इसलिए, आपके पास बहुत सारे विलाप हैं जो भविष्यवक्ताओं और विलाप की पुस्तक से आगे आते हैं।

और विलाप की पुस्तक वास्तव में 586 ईसा पूर्व में बेबीलोनियों द्वारा यरूशलेम के विनाश के समय के बारे में लिखी गई है। और इसलिए यहाँ, उस तबाही के परिणामस्वरूप, आपको विलाप की पुस्तक में भी उस पर एक प्रतिबिंब मिलता है। और यहाँ तक कि नए नियम में भी, आप देखते हैं कि क्रूस से यीशु का रोना भी एक विलाप है।

वह वास्तव में भजन 22 से उद्धरण दे रहा है, जो यहाँ विलाप का भजन है। और आप जानते हैं, वह यहाँ क्रूस पर होने के कारण इसका उपयोग कर रहा है। और इसलिए, हम यहाँ देखते हैं कि जब हम प्रार्थनाओं और विलापों के बारे में सोचते हैं जो हमें शास्त्र में मिलते हैं, तो वे बहुत प्रासंगिक हैं।

और इसलिए जब हम यहाँ विलाप के बारे में सोचते हैं, तो मैं यहाँ सबसे पहले यह कहना चाहता हूँ कि हम यह भी देख सकते हैं कि बाइबल में विलाप वास्तव में एक शैली है। और इसलिए, यह वास्तव में भजन संहिता में एक शैली है। और इसलिए आपके पास एक शैली है, आप जानते हैं, आप जानते हैं, हम शैली के महत्व के बारे में क्या देखते हैं? शैली वास्तव में क्या है? तो पाठ शैली को समझना क्यों महत्वपूर्ण है? और इसलिए मैं ऐसा क्यों कर रहा हूँ? मैं अपनी चर्चा को इसी पर आधारित करना चाहता हूँ क्योंकि हम यह देखना चाहते हैं कि जब हम विलाप के इस विषय के बारे में सोचते हैं तो बाइबल के पाठ से क्या आ रहा है।

और तो यहाँ शैली क्या है? और तो, शैली, यह सिर्फ एक बुनियादी परिभाषा है, यहाँ कलात्मक, संगीतमय या साहित्यिक रचना की एक श्रेणी है जो किसी विशेष शैली, रूप या विषय-वस्तु द्वारा विशेषता रखती है। तो, आपके पास उदाहरण हैं, आप जानते हैं, आत्मकथाएँ, आपके पास मैनुअल और निर्देश भी हैं। यह एक विशेष शैली है, या आपके पास परी कथाओं की शैली है।

तो, अगर मैं कहूँ, आप जानते हैं, एक बार, आप वास्तव में जानते हैं कि जब मैं उस शब्द का उच्चारण करता हूँ, तो हम किस तरह की शैली का सामना करने जा रहे हैं। और इसलिए, यहाँ कारण यह है कि यह हमें यह समझने में मदद करता है कि हम क्या पढ़ रहे हैं, हम क्या सुन रहे

हैं, हम क्या देख रहे हैं, ताकि हम वास्तव में इसकी सही व्याख्या कर सकें और उस तरह से इसके बारे में सोच सकें। और इसलिए यहाँ, जब हम भजन संहिता की पुस्तक के बारे में सोचते हैं, तो आप जानते हैं, हम इसकी व्याख्या कैसे करते हैं? हम भजन संहिता की पुस्तक को सही तरीके से कैसे देखते हैं? और इसलिए आपके पास यहाँ हरमन गुंकल हैं।

वह एक विधागत विद्वान थे। उन्होंने 1926 में भजनों का कुछ विश्लेषण किया था। और उन्होंने जो किया वह यह था कि, आप जानते हैं, भजनों में कुछ ऐसा था जो एक साथ जुड़ा हुआ था जिससे आपको भजनों में कुछ समानताएँ मिलीं, कुछ प्रकार के रूप और संरचनाएँ और शब्द और विषय।

और इसलिए अपने अवलोकन में, उन्होंने पाया कि भजनों में अभिव्यक्ति के समान रूप और संरचना थी। और इसलिए उनके विश्लेषण ने वास्तव में भजनों को विभिन्न शैलियों के अनुसार वर्गीकृत किया। इसलिए, उनके काम में वास्तव में चार मुख्य शैलियाँ पाई गईं।

उनके समय से अब तक इस पर बहुत काम हुआ है और वास्तव में इस शैली के भीतर बहुत सी उपश्रेणियों की पहचान की गई है। तो उनके पास जो चार उपश्रेणियाँ थीं, वे थीं स्तुति या भजन, धन्यवाद, फिर उन्होंने व्यक्तिगत और साथ ही सामुदायिक या कॉर्पोरेट विलाप की भी पहचान की। और इसलिए हमारा ध्यान वास्तव में यहाँ विलापों पर होगा।

इसलिए व्यक्तिगत और सामुदायिक या कॉर्पोरेट दोनों ही तरह के लोग इस बारे में सोचते हैं। इसलिए यहाँ, जब हम इस बारे में सोचते हैं, आप जानते हैं, शैली और यह कैसे निर्धारित होती है, तो यहाँ हमें किस तरह की बात ध्यान में आती है, यहाँ तक कि हम किसी शैली के बारे में भी सोचते हैं। तो गुंकल के लिए, वह यहाँ देख रहा था, क्या उनके जीवन में एक समान सेटिंग थी? तो, यहाँ, क्या वे किसी विशेष समय, स्थान या इस तरह की स्थिति से उत्पन्न हुए थे? क्या उनके पास समान विचार, भावनाएँ या मनोदशाएँ थीं जो उस तरह से सामने आईं? क्या उनके पास एक समान शैली और संरचना या यहाँ तक कि साहित्यिक विशेषताएँ थीं जो इन विशेष शैलियों से आगे आती हैं? इसलिए, शैली का निर्धारण करते समय, हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि यह हमेशा कट और सूखा न हो।

कभी-कभी आपके पास कुछ ऐसा हो सकता है जो इस तरह से कई अलग-अलग श्रेणियों में फिट बैठता है। हम आज भी ऐसा पाते हैं। आप जाकर कोई फिल्म देख सकते हैं।

यह एक्शन और रोमांस के अंतर्गत आ सकता है, या यह, आप जानते हैं, विभिन्न प्रकार की शैलियों में फिट हो सकता है। यह हमेशा स्पष्ट नहीं होने वाला है, और इसमें हमेशा हर एक तत्व नहीं होगा जो आपको इस तरह से किसी विशेष शैली में मिलता है। लेकिन उन चीजों को ध्यान में रखते हुए, मैं चाहता हूँ कि हम यहां विलाप प्रार्थनाओं के बारे में सोचें।

और क्या कुछ चीजें देखी गईं? आप जानते हैं, क्या उनमें विशिष्ट शैली या विशेषताएँ, संचार, या यहाँ व्यक्त की गई भावनाओं के प्रकार समान थे? हम उन्हें यहाँ भजन संहिता की पुस्तक में पाते हैं, और विलाप में वह सब है। और इसलिए जबकि प्रत्येक विलाप अलग है, वे कुछ समान

साहित्यिक पैटर्न, रूप और संरचनाएँ साझा करते हैं। और मुझे लगता है कि हमारे लिए यहाँ इस पर ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है।

इसलिए, जब हम यहाँ भजनों को देख रहे हैं, जब लोग दर्द से जूझ रहे होते हैं, तो यह सिर्फ भावनाओं की कच्ची अभिव्यक्ति के बारे में नहीं होता है, बल्कि कुछ संरचना भी होती है जो मौजूद होती है। कुछ तरीके हमारे लिए शिक्षाप्रद हैं क्योंकि हम इस तरह से खुद के लिए भी विलाप करने के बारे में सोचते हैं। इसलिए, हम इन विलाप प्रार्थनाओं और इन विलापों से एक शैली के रूप में सीख सकते हैं और यह क्यों महत्वपूर्ण है।

मैं इसकी तुलना इस बात से करता हूँ कि जब यीशु, उनके शिष्यों ने यीशु के जीवन को देखा और पाया कि वे प्रार्थना करने वाले व्यक्ति थे, तो वे यीशु के पास आए और उन्होंने कहा, यीशु, हमें प्रार्थना करना सिखाएँ। और जिस तरह से यीशु ने उन्हें सिखाया वह ज़रूरी नहीं था कि, आप जानते हैं, बस अपने स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करें और जो कुछ भी आपके दिल में है उसे कहें। यीशु ने ऐसा नहीं कहा।

यीशु ने वास्तव में उन्हें प्रभु की प्रार्थना दी। और यहाँ उन्होंने उन्हें, आप जानते हैं, आप जानते हैं, इसलिए मुझे यकीन है कि आपने शायद अलग-अलग उपदेशों या अलग-अलग शिक्षाओं के बारे में सुना होगा जहाँ लोगों ने वास्तव में प्रभु की प्रार्थना के विभिन्न तत्वों को देखा है। और इसलिए जहाँ वे कहते थे, हमारे पिता जो स्वर्ग में हैं, आप जानते हैं, तो यहाँ वह वाक्यांश ही है, आप जानते हैं, परमेश्वर हमारा पिता है।

वह सिर्फ इतना दूर का देवता नहीं है, बल्कि वह स्वर्ग में है। वह हमारे सांसारिक पिता जैसा नहीं है। और इसलिए यहाँ यह तय होता है कि हम कैसे सोचते हैं कि परमेश्वर कौन है, जब हम उसके सामने प्रार्थना में आते हैं।

और इसलिए यहाँ यह बहुत शिक्षाप्रद है। और कभी-कभी लोग वास्तव में प्रभु की प्रार्थना को रटकर करते हैं, आप इसे एक साथ प्रार्थना करते हैं, और आप इसे एक साथ दोहराते हैं। और अन्य समय में, आप वास्तव में उस प्रार्थना को व्यक्तिगत बना सकते हैं।

और इसलिए, विभिन्न तत्वों को देखते हुए, इसे दैनिक उपयोग के लिए वैयक्तिकृत करना, और हम इसे कैसे प्रार्थना कर सकते हैं। और इसलिए, जब हम विलाप के तत्वों और विलाप की प्रार्थनाओं के बारे में सोचते हैं, तो मैं इसे इस तरह से तुलना करता हूँ। इन प्रार्थनाओं में आम तौर पर पाए जाने वाले कुछ तत्व क्या हैं? हम उन्हें अपने लिए, दुख और कठिनाइयों की विभिन्न स्थितियों के लिए कैसे वैयक्तिकृत कर सकते हैं जिनका हम सामना करते हैं? बाइबल वास्तव में हमें ये उदाहरण देती है, और परमेश्वर जानता है कि, आप जानते हैं, हम दर्द से गुज़रेंगे। ऐसी कठिनाइयाँ होंगी जिनका हम यहाँ सामना करेंगे, यहाँ तक कि इस तरह से विश्वासियों के रूप में और उस अर्थ में इसे समझने के रूप में भी।

और इसलिए जब हम यहाँ शैली के बारे में सोचते हैं, तो विलाप के दो प्रकार या दो मुख्य प्रकार हैं, जिन्हें मैं पहले ही पहचान चुका हूँ। हमारे पास व्यक्तिगत और साथ ही सामुदायिक या

कॉपोरेट विलाप हैं। और इसलिए यहाँ, इनमें कौन से तत्व पाए जाते हैं, और हम इस तरह से उनके बारे में कैसे बात करते हैं? और इसलिए यहाँ व्यक्तिगत विलाप के लिए, हम पाते हैं कि बहुत बार वे शोक या दुख व्यक्त कर रहे हैं।

तो यहाँ वे बहुत ही, आप जानते हैं, कुछ ऐसी चीज़ों को अभिव्यक्त कर रहे हैं जिनका सामना भजनकार कर रहा है, चाहे वह दुःख हो या पीड़ा, यह परमेश्वर को यह दिखाने की आवश्यकता प्रस्तुत करता है कि वह इसे हल कर सकता है। और इसलिए यहाँ वे इसे परमेश्वर के पास ला रहे हैं और परमेश्वर से इस समाधान के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। वे दर्द और बीमारी और पीड़ा के विषयों पर हावी हैं।

तो कई बार, आप जानते हैं, कुछ ऐसी चीज़ों से निपटना जिनसे हम आज निपटते हैं, वास्तव में उनमें कोई बदलाव नहीं आया है। दर्द, पीड़ा और बीमारी जो हमारे जीवन को पीड़ित करती है, भजनकार और शास्त्र में लोगों के जीवन को भी पीड़ित करती है। और इसलिए भजन की पुस्तक में लगभग 39 व्यक्तिगत विलाप पाए जाते हैं।

और इसलिए यहाँ, ये आपके लिए उनमें से कुछ उदाहरण हैं। और व्यक्तिगत विलाप, शीर्षक की तरह, बहुत बार व्यक्तिगत व्यक्ति के बारे में बात कर रहा है। इसलिए, बहुत सारे व्यक्तिगत प्रथम-व्यक्ति सर्वनामों का उपयोग करना।

तो यहाँ आपके पास मैं और मुझे है, जिसका उपयोग भजनों में बहुत बार किया गया है। और उनमें से कई सामान्य शब्दों में व्यक्त किए गए हैं। और इसलिए यह इस अर्थ में दिलचस्प है कि वे जरूरी नहीं कि किसी विशिष्ट स्थिति के लिए हों, हालाँकि उनके कुछ विशिष्ट विषय हैं, लेकिन वे हमारे लिए इतने सामान्य हैं कि हम उन्हें व्यक्तिगत बना सकें।

तो, मैं यह कह रहा हूँ कि कभी-कभी आप भजनों की प्रार्थना करना चाह सकते हैं, आप जानते हैं, जैसा कि, आप जानते हैं, कई चर्च के पितृसत्तात्मक पिता वर्षों से ऐसा करते आए हैं। लेकिन आप इसे व्यक्तिगत रूप से भी बना सकते हैं, आप जानते हैं, कुछ स्थितियों को पहचानना जो प्रकृति में अधिक सामान्य हैं, और इसे अपने लिए व्यक्तिगत रूप से भी बना सकते हैं। और इसलिए यहाँ, लोग इसके माध्यम से भी भजनकार के साथ पहचान कर सकते हैं।

इसलिए, उन्हें शारीरिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक स्थितियों पर भी लागू किया जा सकता है, जैसा कि हम उस अर्थ में सोचते हैं। इसलिए, जब हम सामान्य तत्वों के बारे में सोचते हैं, तो हम पाते हैं कि लगभग पाँच ऐसे हैं जिनकी पहचान की गई है, जैसा कि हम इसके बारे में सोचते हैं। और इसलिए मैं आमतौर पर यहाँ इन पाँचों के बारे में थोड़ा-बहुत बताना चाहता हूँ।

और वास्तव में, बाद में मेरी पुस्तक में, अध्याय पाँच से दस में, मैं विभिन्न प्रकार के विलाप प्रस्तुत करता हूँ और उन विशिष्ट उदाहरणों में इन तत्वों के बारे में बताता हूँ। तो, यहाँ आपके पास विलाप और अकेलापन, विलाप और संदेह, विलाप और क्रोध है। तो, विलाप सिर्फ एक आयामी प्रकार का दुःख महसूस करना नहीं है।

हालाँकि यह वहाँ है और इसमें शामिल है, बहुत सी अलग-अलग भावनाएँ हैं जिनसे हम जूझते हैं, और विलाप हमें इस तरह से प्रक्रिया करने में मदद कर सकता है। और इसलिए यहाँ, बाद के पाठ में, मैं वास्तव में भजनों के विभिन्न तरीकों में से एक के माध्यम से चलाऊँगा और यह भी कि यह उस तरह से अकेलेपन के माध्यम से कैसे प्रक्रिया करता है। तो, लेकिन सबसे पहले यहाँ जो हमारे पास है वह पहला तत्व संबोधन या आह्वान है।

और इसलिए यहाँ, प्रभु की प्रार्थना की तरह, यह परमेश्वर के पास आने के बारे में है। और इसलिए यहाँ, यह वह तत्व है जहाँ यह परमेश्वर की ओर मुड़ रहा है। यह एक प्रार्थना है।

यह सिर्फ हमारी भावनाओं, हमारी भावनाओं को वातावरण या ब्रह्मांड में या यहाँ तक कि खुद के सामने प्रकट करना नहीं है। यह वास्तव में आस्था का कार्य है और इस तरह से ईश्वर की ओर मुड़ना है। और इसलिए, यह एक संबोधन या आह्वान है।

कई बार, यह बहुत सरल होता है। यह एक तरह से, आप जानते हैं, परमेश्वर की ओर मुड़ना और याहवे या एलोहिम, परमेश्वर, मेरे पिता, या मेरे उद्धारकर्ता, या मेरी चट्टान कहना है। तो आप इसे यहाँ भजनों में देख सकते हैं और यह प्रार्थना में कैसे खुलता है।

यह बहुत सरल है। यह ईश्वर की ओर मुड़ना है, ईश्वर को पुकारना है, इस तरह का आह्वान या संबोधन है, ताकि हम जान सकें कि यह एक प्रार्थना है, इस तरह से ईश्वर को पुकारना है। फिर आपके पास यहाँ दूसरा तत्व है, जो संभवतः विलाप का अभिन्न अंग है।

तो यहाँ, यह एक विलाप या याचिका है। और इसलिए यहाँ, कई बार इसमें पाप की स्वीकारोक्ति या यहाँ तक कि निर्दोषता का दावा जैसे तत्व शामिल हो सकते हैं। तो यहाँ, भजनकार कुछ आत्म-चिंतन कर रहा है, व्यक्तिगत पाप को पहचान रहा है, या यहाँ तक कि निर्दोषता को भी पहचान रहा है, विशेष परिस्थितियों में अपने हाथों को साफ रखने की तरह।

इस भाग में परमेश्वर के बारे में और परमेश्वर से भी शिकायतें हैं। और इसलिए यहाँ किस तरह की स्थिति है जिसके साथ भजनकार संघर्ष कर रहा है, इस बारे में बात करना ही हम इस दूसरे तत्व में बता रहे हैं। फिर आपके पास यह तीसरा तत्व है, जिसे प्रेरणाएँ कहा जाता है।

और इसलिए यह घटक परमेश्वर को कार्य करने या कार्य की ओर बढ़ने के लिए कारण देता है। तो यहाँ, जैसा कि भजनकार प्रार्थना कर रहा है, जैसा कि भविष्यवक्ता प्रार्थना कर रहा है, या जैसा कि बाइबल में कोई प्रार्थना कर रहा है, यहाँ परमेश्वर के कार्य करने के लिए क्या प्रेरणा है? और इसलिए यह तत्व वास्तव में उस प्रार्थना को जोड़ता है जिसे भजनकार परमेश्वर और उसके चरित्र के बारे में सच जानता है। और इसलिए यहाँ, आप जानते हैं, परमेश्वर को कार्य क्यों करना चाहिए? और इसलिए यहाँ, यह भजनकार की तरह है, या इसे यहाँ प्रस्तुत करते हुए, इस अर्थ में परमेश्वर के लिए प्रेरणाएँ हैं।

फिर आपके पास यह चौथा तत्व है, जो विश्वास की स्वीकारोक्ति या सुने जाने का आश्वासन है। और इसलिए, मैं यहाँ कहना चाहता हूँ कि यहाँ ये पाँच तत्व हैं, जो यहाँ विलाप भजनों की विशेषता हैं, और विशेष रूप से बहुत सारे व्यक्तिगत विलाप, हालाँकि कुछ लोग इसे कुछ

सामुदायिक विलापों पर भी लागू कर सकते हैं। यहाँ आप पाते हैं कि हर एक विलाप में सभी पाँच तत्व नहीं होंगे।

कभी-कभी उनमें से कोई एक तत्व गायब होगा, और वे हमेशा एक ही क्रम में नहीं होंगे, लेकिन आप इसे भी पहचानने में सक्षम होंगे। और आप इसे साहित्य के भीतर भी देख सकते हैं, यहाँ तक कि विभिन्न प्रकार की शैलियों के साथ भी, आप जानते हैं, आप कुछ ऐसी चीजें देखेंगे जिन्हें पहचाना जाएगा, लेकिन यह हमेशा इस तरह से एक जैसा नहीं होगा। और इसलिए यहाँ, इसके साथ भी, जैसा कि हम विश्वास की इस स्वीकारोक्ति या सुने जाने के आश्वासन के बारे में सोचते हैं, हर विलाप में ऐसा नहीं होने वाला है।

तो, यहाँ तक कि भजन 88 में भी, जिसे संभवतः सबसे अंधकारमय भजन माना जाता है, उसमें वह तत्व नहीं है। और इसलिए कुछ मायनों में यह भी, आप जानते हैं, एक तरह से आश्चर्य करने वाला है। तो, यह हमेशा होता है, आप जानते हैं, हमारे विलापों के भीतर भी, यह हमेशा वैसा नहीं होता जैसा हम इसे यहाँ देखते हैं या जिस तरह से हम इसे संसाधित करते हैं।

और लोग अभी भी कभी-कभी विलाप करते हुए और भगवान के सामने अपनी बातें रखते हुए इस प्रक्रिया में लगे रहते हैं। और यह ठीक है, यहां तक कि हमारी प्रार्थनाओं में भी। और इसलिए, जब यह मौजूद होता है, तो यह महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह विलाप से आशा की ओर बदलाव का प्रतीक है।

और इसलिए अधिक विशेष रूप से, यह भजनकार या भजनकार के भीतर अविश्वास से विश्वास की ओर मोड़ने का बिंदु है। और इसलिए, बहुत बार यह व्याकरण के माध्यम से, भजनकार की शब्दावली के माध्यम से संकेत दिया जाता है। और इसलिए, हिब्रू व्याकरण में, इसे वव प्रतिकूल कहा जाता है।

वास्तव में यहाँ इसका अनुवाद एक संयोजन के रूप में किया गया है, लेकिन, या अब, जैसा कि आप इसे भजन संहिता की पुस्तक में देखेंगे। और इसलिए यहाँ आप उदाहरण देखते हैं, और यह विलाप से दूसरे प्रकार के भाषण में इस संक्रमण को इंगित करता है। तो, विश्वास की स्वीकारोक्ति या सुनी जाने के आश्वासन के लिए।

तो, लेकिन मैं आप पर भरोसा करता हूँ या ऐसा कुछ, इसमें किसी तरह का कबूलनामा। और इसलिए, इस विशेष तत्व के बारे में जो दिलचस्प है वह यह है कि जैसे-जैसे विद्वानों ने इसे देखा, आप जानते हैं, यह बदलाव किस तरह से होता है? कभी-कभी हम पढ़ रहे होते हैं और अचानक, आप जानते हैं, यह वास्तव में सुबह की तरह है और अंधेरे स्थितियों के बारे में सोच रहे हैं, लेकिन अचानक यह भजनकार या भजन इस तरह के विश्वास के कबूलनामे में फूट पड़ता है। जैसे, यह कैसे होता है? और यहाँ जो दिलचस्प है वह यह है कि विद्वानों ने इस बारे में बहुत से अलग-अलग तरीकों से बात की है कि विश्वास कैसे हो सकता है।

क्या यह उद्धार की भविष्यवाणी थी? क्या यह कुछ ऐसा था जिसके बारे में, आप जानते हैं, उन्हें याद दिलाया गया था, और यह कि ईश्वर का चरित्र हमेशा इस तरह से एक समान नहीं होता है।

और मुझे लगता है कि यह वास्तव में आश्चर्य करने वाला है क्योंकि ऐसा ही है, जीवन कभी-कभी इसी तरह काम करता है, यहाँ तक कि हमारी अपनी प्रार्थनाओं के साथ भी। कभी-कभी जिस तरह से ईश्वर हमें प्रोत्साहित करता है वह उन तरीकों के माध्यम से होता है जो उसने अतीत में काम किए हैं या शास्त्रों के माध्यम से जो वह ध्यान में लाता है, या, आप जानते हैं, ईश्वर, विभिन्न चीजों के माध्यम से काम करता है और प्रोत्साहन विभिन्न रूपों में आता है।

यह हमारे दिलों को प्रोत्साहित करने और उस तरह के परिवर्तन, या विश्वास या आश्वासन को लाने में मदद करता है कि हमारी बात सुनी जाएगी। और मुझे लगता है कि यह वास्तव में वास्तविकता का प्रतिबिम्ब है, भले ही हम इस तरह से भगवान के सामने इन प्रार्थनाओं को संसाधित करते हैं। और फिर यहाँ आपके पास यह अंतिम है, जो प्रशंसा की प्रतिज्ञा है।

इसलिए, क्योंकि भजनकार ने सुना जाने का आश्वासन महसूस किया या मुक्ति का अनुभव किया, वह अब स्तुति की प्रतिज्ञा या वादा करने में सक्षम है। और इसलिए यहाँ आप देख सकते हैं कि कुछ ऐसा आता है, आप जानते हैं, मैं अभी भी उसकी स्तुति करूँगा या, आप जानते हैं, कुछ प्रकार की शब्दावली या कुछ प्रकार की चीज़ें जो इसे भी दर्शाती हैं। और इसलिए, जैसा कि मैंने यहाँ कहा, यहाँ सभी विलापों में हर एक तत्व नहीं मिलेगा, लेकिन हम इन पाँच सामान्य तत्वों को पाते हैं जो इस तरह से मौजूद हैं।

तो अब मैं इस बारे में थोड़ी बात करना चाहता हूँ, आप जानते हैं, प्रार्थना और विलाप प्रार्थनाएँ क्यों महत्वपूर्ण हैं। हमारे लिए यहाँ इस बारे में सोचना और इस विषय पर विचार करते समय इस पर चिंतन करना क्यों महत्वपूर्ण है? और इसलिए मैं यहाँ इस तरह की समझ पर वापस आना चाहूँगा कि भावनात्मक दर्द को ठीक करने के लिए, हमें वास्तव में इसे अपनी चेतना में आमंत्रित करने की आवश्यकता है। और मुझे यहाँ 12-चरणीय कार्यक्रम से यह उद्धरण पसंद है। यह आपको ही महसूस करना है।

आपको इसे ठीक करने के लिए इसे महसूस करना होगा, आप जानते हैं, और कभी-कभी, आप जानते हैं, हम इसे महसूस नहीं करना चाहते हैं। हम वास्तव में इसे इस तरह से दबाना चाहते हैं, लेकिन यहाँ हम इसे उपचार लाने के लिए अपनी चेतना में ला रहे हैं। और मैं इसके बारे में बाद में भी थोड़ी बात करूँगा, जब हम यहाँ विलाप के विभिन्न उद्देश्यों के बारे में बात करेंगे, लेकिन, आप जानते हैं, हम अपनी भावनाओं को सुन्न या दबाना या नकारना नहीं चाहते हैं।

आप जानते हैं, कई बार हम अपनी चीज़ों को छिपाने में माहिर होते हैं। ठीक है। इसलिए हम इससे निपटना नहीं चाहेंगे, और हम इस अर्थ में भी इसे छिपाना चाहेंगे।

तो, हममें से कुछ लोग भावनात्मक दर्द को नकारने में इतने माहिर हो गए हैं कि हम अपने जीवन में काम कर सकते हैं। और इसलिए हमारे जीवन में बहुत कुछ चल रहा है। और इसलिए, आप जानते हैं, हम इसे एक तरफ धकेल देते हैं ताकि हम काम कर सकें, और हमने अनजाने में यह सीख लिया है कि दर्द को कैसे दूर रखा जाए ताकि हम अपने दैनिक जीवन को किसी तरह से संतुलित कर सकें।

इसलिए यहाँ हमारे पास अपनी भावनाओं और भावनाओं से विचलित होने का समय नहीं है। हमें, आप जानते हैं, किसी तरह से सामना करना पड़ता है ताकि हम जीवन से निपट सकें और संतुलन बना सकें। हालाँकि, ऐसा करके, कभी-कभी हम अपने जीवन के साथ-साथ अपने दिलों में भी ऊर्जा असंतुलन पैदा कर लेते हैं।

और हमें शायद इसका एहसास भी न हो, कि ऐसा हो रहा है, लेकिन हमारी एकमात्र जागरूकता यह महसूस करना हो सकता है कि हम अच्छा महसूस नहीं कर रहे हैं। हम नहीं जानते कि हम खुद को क्यों अच्छा महसूस नहीं कर रहे हैं। हम कुछ हद तक अच्छा महसूस नहीं कर रहे हैं, और हम अपने जीवन को सीमित आंतरिक संसाधनों के साथ जी रहे हैं और खुद को ठीक करने के लिए लगातार अपने बाहर कुछ खोज रहे हैं।

और इसलिए यह कुछ ऐसा है जिसे हम पहचान भी नहीं पाते। और, लेकिन ये कुछ संकेत हैं कि शायद हम अपने दिल में मौजूद कुछ चीज़ों से इस तरह से नहीं निपट रहे हैं। और इसलिए जब तक हम वास्तव में अपने दर्द का सामना नहीं करेंगे और वास्तव में उस तरीके से उससे निपटेंगे, तब तक हमें असली उपचार नहीं मिलेगा।

और इसलिए मुझे लगता है कि यहाँ, हम अक्सर दर्द को दबा कर अपने चेहरे पर मुखौटा लगा लेते हैं। और इसलिए यहाँ, आप जानते हैं, भले ही हम आंतरिक रूप से बहुत सी चीज़ों से निपट रहे हों, लेकिन जब हम इस तरह से दुनिया का सामना कर रहे होते हैं, तो हम एक मुखौटा लगा लेते हैं, और हम सोचते हैं कि दर्द को अनदेखा करने से यह वास्तव में दूर हो जाएगा। इसलिए, अगर हम यह दिखावा नहीं करते कि यह वहाँ नहीं है, तो यह यहाँ भी दूर हो जाएगा।

मुझे लगता है कि हम अपने स्वास्थ्य के साथ भी कई बार ऐसा करते हैं। आप जानते हैं, हम जानते हैं कि हमारे स्वास्थ्य से जुड़े कुछ मुद्दे ऐसे हैं जिनसे हमें निपटना है। और हम सोचते हैं कि बिना इससे निपटे, हम इसे अनदेखा कर देते हैं।

हमें लगता है कि यह दूर हो जाएगा, लेकिन हम यह नहीं समझते कि इस तरह से समस्याओं का समाधान नहीं होने वाला है, चाहे वह भावनात्मक दर्द हो या शारीरिक दर्द। और कभी-कभी ऐसा करने से हमारे लिए चीज़ें और भी बदतर हो सकती हैं, जब हम बस यह दिखावा करते हैं कि यह वहाँ नहीं है। और इसलिए वास्तव में सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और व्यक्तित्व विज्ञान में एक प्रकाशित प्रकार का अध्ययन है जिसमें पाया गया है कि जब आप अपनी भावनाओं को दबाते हैं, तो यह वास्तव में लोगों को अधिक आक्रामक बना सकता है।

तो उन्होंने वास्तव में एक अध्ययन किया, उन्होंने कुछ प्रतिभागियों से वास्तव में अपनी भावनाओं को दबाने के लिए कहा क्योंकि वे एक फिल्म में परेशान करने वाले दृश्य देख रहे थे। और उनके पास एक समूह था जो अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकता था, और उन्हें अपनी भावनाओं को दबाना पड़ा। और फिर उनके पास एक और समूह था जिसे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की अनुमति थी।

और इसलिए यहाँ, जिन लोगों को अपनी भावनाओं को दिखाने की अनुमति दी गई थी, वे वास्तव में बाद में कम आक्रामक थे। जो लोग इससे निपट नहीं पाए, उन्होंने पाया कि वे कुछ स्थितियों में

भावनात्मक रूप से अधिक आक्रामक तरीके से प्रतिक्रिया कर रहे थे। तो यहाँ एक नैदानिक मनोवैज्ञानिक, विक्टोरिया टेराट हैं, जो इस पर टिप्पणी करते समय निम्नलिखित बातें कहती हैं।

इसमें कहा गया है, इसलिए वह दैनिक जीवन का उदाहरण दे रही है। तो, उदाहरण के लिए, आप अपने भाई पर गुस्सा हो सकते हैं, और अपने गुस्से में उबलने के बाद, कुछ भी न कहने पर, आप भावनात्मक विस्फोट को बढ़ावा दे सकते हैं। इसलिए, जब आप कुछ हफ्ते बाद कार चला रहे होते हैं और कोई आपको काटता है, तो आप सड़क पर गुस्से से भर जाते हैं, जिससे दुर्घटना हो जाती है।

और किसी स्थिति के प्रति वह विस्फोट और अति प्रतिक्रिया आपके शरीर द्वारा उस दबी हुई भावना को बाहर निकालने का तरीका है। और इसलिए, क्या आपने कभी किसी विशेष स्थिति पर अत्यधिक प्रतिक्रिया की है? शायद, आप जानते हैं, आपके बच्चे, आप जानते हैं, छोटे हैं और वे, आप जानते हैं, उग्र हैं और अचानक आपके पास बहुत सारी दबी हुई भावनाएँ या गुस्सा है जो काम या अन्य स्थितियों से आ सकता है। और फिर आप पाते हैं कि आपके बच्चे कुछ चीज़ों पर कैसे प्रतिक्रिया कर रहे हैं, इस पर आप अति प्रतिक्रिया कर रहे हैं।

और इसलिए आपके पास ये दबी हुई भावनाएँ हैं, और अब आप उन्हें बाहर निकाल रहे हैं और कुछ स्थितियों पर ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया कर रहे हैं। इसलिए कभी-कभी हम यहाँ देख सकते हैं कि हमारी भावनाएँ, जब हम उन्हें दबाने की कोशिश करते हैं, तो वे वास्तव में अन्य तरीकों और अन्य रूपों में बाहर आने वाली हैं जो वास्तव में हमारे लिए भी हानिकारक हो सकती हैं, और हम इन चीज़ों से कैसे निपटते हैं। ऐनी लैमॉट ने अपनी राष्ट्रीय बेस्टसेलर, ट्रेवलिंग मर्सी में निम्नलिखित बातें कही हैं।

वह कहती हैं, " इतने सालों में मैं इस महान झूठ पर विश्वास करती रही कि दुख को जितनी जल्दी हो सके और निजी तौर पर दूर किया जाना चाहिए। लेकिन तब से मैंने जो पाया है वह यह है कि दुख का आजीवन डर हमें एक बंजर, अलग-थलग जगह पर रखता है, और केवल शोक ही दुख को ठीक कर सकता है। समय बीतने के साथ-साथ यह तीक्ष्णता कम हो जाएगी, लेकिन दुख के प्रत्यक्ष अनुभव के बिना अकेले समय इसे ठीक नहीं कर सकता।

और इसलिए यहाँ, आप जानते हैं, हम यहाँ उपचार कैसे ला सकते हैं? हम इन चीज़ों को कैसे व्यक्त कर सकते हैं ताकि हम आगे बढ़ सकें, आप जानते हैं, इसे जाने दें, हमें अर्थ में फँसाए रखें। और इसलिए, यह वह जगह है जहाँ, आप जानते हैं, हमें यह पहचानना होगा कि हम रोबोट नहीं हैं। भगवान ने हमें रोबोट बनने के लिए नहीं बनाया है।

हम इंसान हैं और हमारे अंदर वास्तव में भावनाएँ होती हैं, जिनमें वास्तव में भावनात्मक, आध्यात्मिक और तर्कसंगत तत्व होते हैं जैसा कि हम इसके बारे में सोचते हैं। और इसलिए यहाँ वह हमसे यह अपेक्षा नहीं करता कि हम अपनी भावनाओं को दबाएँ क्योंकि उसने हमें भावनाओं के साथ बनाया है। हम यहाँ इस तरह से उदासीन होने के लिए नहीं हैं जैसा कि हम इसके बारे में सोचते हैं।

और इसलिए, वास्तव में, एक सवाल जो मैं पूछना चाहता हूँ, वह यह है कि, क्या आप अपने दर्द से बचने या उसे दबाने की कोशिश करते हैं? आप जानते हैं, क्यों या क्यों नहीं, यदि नहीं, तो आप अपने आप को अपने दर्द को महसूस करने की अनुमति कैसे देते हैं? और इसलिए यहाँ इस पर विचार करने की बात है। आप जानते हैं, क्या आप अक्सर अपने दर्द को दबाते हैं, या क्या आप अपने आप को वास्तव में अपने दिल में मौजूद कुछ चीजों से निपटने की अनुमति देते हैं? और इसलिए हमें उपचार का अनुभव करने के लिए अपने दर्द के साथ ईमानदार होने की आवश्यकता है। और इसलिए हम संपूर्ण प्राणी हैं, न केवल तर्कसंगत, शारीरिक या भावनात्मक प्राणी, बल्कि हम वास्तव में अपने जीवन में इन सभी पहलुओं के साथ संपूर्ण व्यक्ति हैं।

और इसलिए अगर हम अपने दर्द से नहीं निपटते हैं, तो यह वास्तव में अलग-अलग तरीकों से सामने आएगा। और इसलिए हमने यह भी देखा। यहाँ एक और अध्ययन है जो कहता है कि अगर हम अपने भावनात्मक दर्द से नहीं निपटते हैं, तो यह वास्तव में हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

कई अध्ययनों से पता चला है कि जो लोग अपनी भावनाओं को लगातार दबाते हैं, वे भावनात्मक रूप से अभिव्यक्त करने वालों की तुलना में बीमारी के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। उन्होंने यह भी पाया कि भावनात्मक दमन से शारीरिक प्रतिक्रिया बढ़ जाती है, जो व्यक्ति को बीमारी के प्रति संवेदनशील बनाती है। और इसलिए, आपके पास यहाँ कई अध्ययन हैं जो इस तरह की बात देखते हैं।

और इसलिए यह पहचानना कि हम संपूर्ण व्यक्ति हैं। इसलिए, अगर हम अपनी भावनाओं से नहीं निपट रहे हैं, तो यह हमारे स्वास्थ्य पर भी कुछ प्रभाव डालेगा। 2013 में, हार्वर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ और रोचेस्टर विश्वविद्यालय द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला कि जो लोग अपनी भावनाओं को दबाते हैं, उनमें सभी कारणों से समय से पहले मृत्यु की संभावना 30% से अधिक बढ़ जाती है, और कैंसर से पीड़ित होने का जोखिम 70% बढ़ जाता है।

मेरा मतलब है, यह यहाँ बहुत बड़ी बात है, जब लोग यहाँ नहीं निपट रहे होते हैं, यहाँ तक कि अपने भावनात्मक दर्द से भी, तो इसका शारीरिक परिणाम भी होता है। और इसलिए यहाँ, मैं यह भी कहूँगा कि, यह भी पहचानना है कि विलाप विश्वास का एक कार्य है। और इसलिए, आप जानते हैं, यह पहचानना है कि विलाप क्यों महत्वपूर्ण है? क्योंकि यह विश्वास का एक कार्य है।

तो यहाँ, भगवान में विश्वास है। और इसलिए यहाँ, भगवान हमारे दर्द को संभाल सकते हैं। तो यहाँ, जब हम भगवान के सामने आते हैं और हम यहाँ यह व्यक्त करते हैं, हम विलाप कर रहे हैं और हम भगवान की ओर मुड़ रहे हैं, उनसे दूर नहीं।

इसलिए कई बार जब लोग दर्द व्यक्त कर रहे होते हैं या दर्द से जूझ रहे होते हैं, तो वे खुद को छिपाना या एकांत में रखना चाहते हैं या इस तरह से लोगों से, साथ ही खुद भगवान से भी खुद को दूर रखना चाहते हैं। और इसलिए यहाँ, जब हम विलाप कर रहे होते हैं, तो हम अपने दिलों के भीतर लोगों और भगवान से दूर होने और वास्तव में भगवान की ओर मुड़ने, इस तरह से अपने मुश्किल समय में उनकी ओर मुड़ने का विरोध कर रहे होते हैं। और यहाँ याद रखने वाली एक

और बात यह है कि हम केवल उन लोगों को ही अपने असली विचार बताते हैं जो हमारे सबसे करीब होते हैं।

और इसलिए यहाँ भी यह महत्वपूर्ण है। इसलिए, जब हम यहाँ शोक व्यक्त कर रहे हैं, तो हम यह भी दिखा रहे हैं, आप जानते हैं, कि हम इस घनिष्ठ संबंध में विश्वास करते हैं, जो हमारे पास है, यह वाचा का संबंध जो हमारे पास ईश्वर के साथ है, उसे यहाँ हमारे दर्द को देखने की अनुमति देना। क्योंकि, आप जानते हैं, बहुत बार, हम सोशल मीडिया पर जो क्यूरेट करते हैं वह यह है कि हम लोगों को बहुत अच्छी तरह से नहीं जानते हैं।

इसलिए, हम अपनी वास्तविक भावनाओं को उस अर्थ में व्यक्त नहीं करने जा रहे हैं। और इसलिए, यहाँ हमें वास्तव में अपनी वास्तविक भावनाओं को व्यक्त करने की आवश्यकता है। और परमेश्वर चाहता है कि हम अपने दर्द, अपने बोझ और अपने दुखों को उसके पास लेकर आएँ।

वह चाहता है कि हम अपने दिल का बोझ उसके सामने रखें। और इसीलिए शास्त्र कहता है, आप जानते हैं, मेरे लिए सामान्य बात यह है कि जो लोग थके हुए हैं, आप जानते हैं, और बोझ से दबे हुए हैं। और इसलिए परमेश्वर वास्तव में हमें इस तरह से आमंत्रित करता है।

शोध से यह भी पता चला है कि अपनी भावनाओं को दबाने से उस रिश्ते में संचार बंद हो जाता है। और इसलिए, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में जेम्स ग्राँस द्वारा किया गया यह अध्ययन इस बारे में बात करता है कि, आप जानते हैं, जब आप भावनाओं को दबा रहे होते हैं, तो आप उस रिश्ते में संचार बंद कर रहे होते हैं। आप शायद इसे यहाँ देख सकते हैं, यहाँ तक कि लोगों के साथ अपने रिश्ते में भी।

जब आप बंद हो रहे होते हैं, जब आप अपनी भावनाओं को दबा रहे होते हैं और आप अपने जीवनसाथी या अपने दोस्तों के साथ इसका सामना नहीं कर रहे होते हैं, तो आप वास्तव में, कई बार, खुद को उन लोगों से भी अलग कर रहे होते हैं। और इसलिए यह केवल लोगों के स्तर पर ही नहीं होता है, बल्कि यह भगवान के साथ हमारे रिश्ते में भी हो सकता है। इसलिए, जब हम अपनी भावनाओं को दबा रहे होते हैं, तो हम अपनी भावनाओं को बंद कर रहे होते हैं।

हम वास्तव में यहाँ संचार बंद कर रहे हैं, यहाँ तक कि उस अर्थ में भगवान के साथ भी। और इसलिए जब हम भगवान के साथ ईमानदार नहीं होते हैं, तो हम खुद को उनसे भी दूर कर लेते हैं। और इसलिए कभी-कभी जब लोग वाकई मुश्किल समय से गुज़र रहे होते हैं और वे खुद में वापस जाना चाहते हैं, तो वे भगवान के सामने अपना दर्द भी व्यक्त नहीं करते हैं।

वे वास्तव में कभी-कभी ऐसी स्थिति में आ जाते हैं जहाँ वे प्रार्थना करना या चर्च जाना भी बंद कर देते हैं क्योंकि वे ईश्वर से नाराज़ होते हैं। और इसलिए यहाँ उस भावना को बंद करने की बात है। और इसलिए विलाप हमें ऐसा न करने, उसे बंद न करने, बल्कि उस तरह के संचार को खुला रखने में मदद करता है।

इसलिए, हमें अपनी ईमानदारी और अपने दर्द के बारे में सोचते हुए ईश्वर के सामने आने का विश्वास रखना चाहिए। इसलिए, ईश्वर हमारे दर्द को जानता है और देखता है। हम उसे इस अर्थ में क्यों बाहर रखते हैं? और इसलिए यहाँ, इस बात को पहचानते हुए आना कि यहाँ भी यह महत्वपूर्ण है।

और फिर तीसरी बात, यहाँ याद रखें कि परमेश्वर चाहता है कि हम अपनी प्रार्थनाओं में उसके प्रति ईमानदार रहें। और इसलिए जब हम यहाँ प्रार्थना कर रहे हैं, तो हमारी प्रार्थनाएँ यहाँ सिर्फ़ रटी-रटाई या यांत्रिक या बहुत सामान्य नहीं हैं। लेकिन परमेश्वर के प्रति ईमानदारी एक महत्वपूर्ण सबक है जिसे हम भजनों से सीख सकते हैं।

तो यहाँ हमारे पास डैनियल हेस हैं, जो कहते हैं कि एक भजनकार परमेश्वर को ठीक वैसा ही बताता है जैसा वह महसूस करता है। और यह अक्सर बहुत आध्यात्मिक या परिपक्व नहीं लगता। आज के मसीही एक-दूसरे पर दबाव डालते हैं कि वे परमेश्वर के बारे में किसी भी भावनात्मक अभिव्यक्ति को दबा दें।

कई लोगों के लिए ईसाई आदर्श स्टार ट्रेक पर स्पॉक की तरह कठोर धैर्यवान होना है। और इसलिए यहाँ हम इस तरह से स्पॉक की तरह नहीं बनना चाहते हैं, यहाँ तक कि अपनी भावनाओं को यहाँ और यहाँ तक कि अपनी प्रार्थना में भी दबाए रखना चाहते हैं, लेकिन इस तरह से ईमानदार होना सीखना चाहते हैं। और इसलिए एक व्यक्तिगत चिंतन जिसके बारे में मैं आपको सोचना चाहूँगा, वह है, आप जानते हैं, आपकी प्रार्थनाएँ कैसी लगती हैं? आप जानते हैं, क्या आप अपनी प्रार्थनाओं में ईमानदार हैं? क्या आप सिर्फ़ शब्द कहते हैं या अपनी प्रार्थना में सामान्य बातें व्यक्त करते हैं? आपकी प्रार्थनाएँ प्रभु के साथ कितनी घनिष्ठ हैं? आप उनके साथ जुड़ने में, अपने आस-पास हो रही पीड़ा और चीज़ों के साथ कितने ईमानदार हैं? और इसलिए इस तरह से सोचने के लिए कुछ है।

और इसलिए अब मैं विलाप के बारे में कुछ गलत धारणाओं को संबोधित करना चाहता हूँ। तो, विलाप क्या नहीं है? और इसलिए जब हम बाइबल के विलाप के बारे में सोचते हैं, तो कौन सा विलाप, बाइबल से क्या है? बाइबल के विलाप में हमें क्या नहीं मिलता है? और इसलिए यहाँ, सबसे पहले, विलाप आत्म-दया नहीं है।

मुझे लगता है कि शायद यहाँ इस तरह की गलत धारणा है। यहीं पर क्लॉस वेस्टरमैन कहते हैं, विलाप का एक भी भजन ऐसा नहीं है जो विलाप के साथ समाप्त हो। विलाप का अपने आप में कोई अर्थ नहीं है।

विलाप का संबंध किसी व्यक्ति के अपने दुख या आत्म-दया के वर्णन से नहीं है, बल्कि दुख को दूर करने से है। और इसलिए यहाँ यह एक प्रदर्शन है, एक तरह से ईश्वर के सामने लाना, एक तरह से स्थिति को सामने लाना, लेकिन साथ ही ईश्वर से बदलाव करने के लिए कहना। इसलिए, विलाप के भजन एक गतिशील यात्रा को प्रदर्शित करते हैं।

यह आत्म-दया की स्थिर तस्वीर नहीं है। यह सिर्फ अपने दुखों में डूबे रहने के बारे में नहीं है। और इसलिए यह कुछ ऐसा है जिसे बहुत से लोग विलाप समझते हैं, लेकिन विलाप एक प्रक्रिया है।

और वास्तव में, यहाँ आप देखते हैं कि विलाप के भजन आराधना करने वाले को अपनी कुंठाओं को बाहर निकालने और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए आमंत्रित करते हैं, लेकिन एक समय ऐसा आता है जब कोई रास्ता तलाशने का समय आता है। इसलिए, भजन परिवर्तन की तलाश करते हैं, और वे अंततः वादे पर आधारित होते हैं, संदेह पर नहीं। परमेश्वर कौन है, इसका वादा, परमेश्वर क्या कर सकता है, इसका वादा।

वे स्वीकार करते हैं कि कुछ गलत है और पुष्टि करते हैं कि भगवान इसे ठीक कर सकते हैं। और इसलिए यहाँ, जब हम इसके बारे में फिर से सोचते हैं, तो यह सब एक साथ मिलकर यह एहसास होता है कि यह वास्तव में विश्वास का कार्य है क्योंकि हम इन बातों को भगवान के सामने व्यक्त कर रहे हैं। और दूसरा, यहाँ, विलाप का मतलब विफलता नहीं है।

तो यहाँ, यह इस तरह से है कि हम सोचते हैं। कभी-कभी हम चर्च के भीतर दूसरों से या यहाँ तक कि खुद से भी फैसले के डर से ईमानदार होने से डरते हैं, जैसा कि हम सोचते हैं, आप जानते हैं, क्या मैं पर्याप्त आध्यात्मिक नहीं हूँ? क्या मैं, आप जानते हैं, इन सवालों या इन शंकाओं का सामना अपने दिमाग में कर रहा हूँ? क्या यह यहाँ विफलता है? आप जानते हैं, हम सभी, और आप जानते हैं, यह कुछ ऐसा हो सकता है, आप जानते हैं, हम चर्च में पले-बढ़े हैं। मुझे पता है कि जब मैं चर्च में बड़ा हो रहा था, तो मैंने अक्सर केवल इस बारे में सुना था कि कैसे लोग, आप जानते हैं, कठिनाइयों पर काबू पा लेते हैं।

तो, आपके पास बहुत सी ऐसी गवाहियाँ हैं, आप जानते हैं, कि कैसे लोग संघर्ष कर रहे थे और फिर उन्होंने जीत हासिल की। और ऐसी बहुत सी कहानियाँ थीं जो हमने सुनीं। और इसलिए यहाँ, कभी-कभी यह उन लोगों को आकार देता है जो महसूस करते हैं, अच्छा, मैं कैसे जीत नहीं पा रहा हूँ, या इसमें इतना समय क्यों लग रहा है? क्या मेरे साथ कुछ गड़बड़ है? और इसलिए यहाँ, हमने चर्च के भीतर भी इस तरह की विजयवाद की गतिशीलता बनाई है।

तो, यह एक तरह से ऐसा है, आप जानते हैं, मैं अपनी किताब में यह कहता हूँ, यहाँ यह है कि जब चर्च में प्रामाणिकता को बढ़ावा दिया जाता है, तो कई लोग न्याय के डर से और दूसरों द्वारा अपमानित महसूस करने के कारण कमज़ोर नहीं होना चाहते हैं। कुछ लोगों ने यह भी बताया है कि जब उन्होंने अपने संघर्ष को आवाज़ दी, तो उन्हें तुरंत जवाब मिले और उनसे समय रहते इन मुद्दों पर काबू पाने की उम्मीद की गई। दुख की बात है कि जब लोग संदेह या कठिनाई का सामना करते हैं, तो वे चर्च में रहना नहीं चाहते।

कई लोगों ने तो अपना विश्वास भी त्याग दिया है क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को काम करते या वही विजयी परिणाम लाते नहीं देखा जिसकी दूसरों ने गवाही दी है। ऐसे भी लोग हैं जिन्हें लगा कि उनके संघर्ष को दूर करने में दूसरों की तुलना में अधिक समय लग रहा है, और वे निराश हो गए हैं। साझा करने के इस पैटर्न ने हमें अपने संघर्षों को छिपाने के लिए प्रेरित किया है क्योंकि हमें डर है कि हम विश्वास में कमज़ोर दिखाई देंगे।

और इसलिए यहाँ, हमारे आस-पास के लोगों के निर्णय अक्सर हमें एक कृत्रिम शक्ति का चित्रण करने के लिए प्रेरित करते हैं जिसे दिखाने के लिए परमेश्वर ने हमें कभी नहीं बुलाया। यीशु के विजयी संदेश को संप्रेषित करने की अपनी जल्दबाजी में, चर्च ने अनजाने में यह संप्रेषित किया है कि हानि, उदासी और शोक का अनुभव करना विफलता है। और इसलिए यहाँ, हम उस पर कूदना नहीं चाहते हैं और यहाँ यह पहचानना चाहते हैं कि, आप जानते हैं, पीड़ित होना ठीक है।

संदेह या दर्द या ऐसी ही चीज़ों से निपटना ठीक है, यहाँ तक कि चर्च के भीतर भी। और यही वह जगह है जहाँ हमें इससे निपटना चाहिए और इसे संसाधित करना चाहिए। और यहाँ तीसरी बात यह है कि शिकायत करना और विलाप करना ठीक है।

मैंने अक्सर लोगों से यह सवाल पूछा है कि क्या शिकायत करना गलत नहीं है? मेरा मतलब है कि हमें इससे कैसे निपटना चाहिए? और यहाँ दिलचस्प बात यह है कि लगभग एक तिहाई विलाप गीतों में वास्तव में भगवान के खिलाफ शिकायत है। यह यहाँ बहुत असामान्य है। तो, हम शिकायतों के बारे में सोचते समय और अपनी प्रार्थनाओं में इसे कैसे समेटते हैं? क्या यह गलत नहीं है? आप जानते हैं, वे वास्तव में, इन विलाप गीतों में, भगवान के क्रोध, उनकी उदासीनता, उनकी अस्वीकृति, उनकी भूल और उनके चेहरे को छिपाने के बारे में शिकायत करते हैं।

यहाँ आपके पास यह उदाहरण है। हे प्रभु, तू मुझे क्यों अस्वीकार करता है और अपना मुख मुझसे क्यों छिपाता है? और इसलिए यहाँ, भजनकार ईमानदार है और अपनी भावनाओं में वास्तविक है। हम यहाँ यह भी देखते हैं कि, आप जानते हैं, विलाप भी परमेश्वर से ये ईमानदार प्रश्न उठा सकते हैं।

और इसलिए यहाँ, यहाँ, प्रभु, आपका वह पूर्व महान प्रेम कहाँ है, जिसमें आपने दाऊद से अपनी वफ़ादारी की शपथ ली थी? और इसलिए यहाँ, इस तरह से ईश्वर से ये सवाल, ईमानदार सवाल उठाना। तो, यहाँ मैं शिकायत और विलाप बनाम बड़बड़ाना और शिकायत के बीच के अंतर के बारे में बात करना चाहता हूँ। और इसलिए, यहाँ एक अंतर है, और हम यहाँ यह पहचानना चाहते हैं, विलाप और केवल बड़बड़ाना और शिकायत के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।

और इसलिए यहाँ, यह वह जगह है जहाँ निर्गमन 15 और 17 में, और गिनती में, जंगल की पीढ़ी में, उन्हें दोषी ठहराया गया क्योंकि वे नेतृत्व और प्रभु के खिलाफ एक दूसरे से शिकायत कर रहे थे। और इसलिए, यह महत्वपूर्ण है क्योंकि वे, वे मूल रूप से, यह जरूरी नहीं कि विश्वास का कार्य था, लेकिन यह वास्तव में इस तरह से भगवान और उनके नेताओं के बारे में उनके विचारों को पुख्ता कर रहा था। इसलिए, दूसरे शब्दों में, उनकी शिकायतें प्रार्थनाएँ नहीं थीं।

वे केवल अपने आप से या एक दूसरे से बड़बड़ा रहे थे। वे अपने विचार और प्रार्थनाएँ परमेश्वर के सामने नहीं ला रहे थे। यह एक महत्वपूर्ण अंतर था क्योंकि दूसरों से परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत करना निंदनीय है, लेकिन प्रभु के समक्ष शिकायत लाना प्रोत्साहित किया जाता है।

और इसलिए यहाँ, दूसरों से शिकायत करना सिर्फ़ यह व्यक्त करने का एक तरीका था कि वे परमेश्वर के बारे में क्या सच मानते हैं। यह संवादात्मक नहीं था। यह बातचीत में नहीं था।

यह ईश्वर के साथ संवाद करने का एक तरीका नहीं था, बल्कि यह केवल एक दूसरे के सामने ईश्वर के बारे में अपनी शिकायतें और अविश्वास व्यक्त करने का एक तरीका था। और इसलिए यहाँ, आप यहाँ भी देख सकते हैं, यह वही है जो डॉ. टेम्पर लॉन्गमैन कहते हैं। वह सही ढंग से नोट करते हैं कि जहाँ विद्रोह करने वाले लोग एक दूसरे से ईश्वर के बारे में शिकायत करते थे, वहीं भजनकार और अय्यूब ने सीधे ईश्वर के सामने अपनी विलाप की आवाज़ उठाई।

उत्तरार्द्ध संकेत देता है कि उन्होंने ईश्वर पर भरोसा नहीं छोड़ा है या यह आशा नहीं छोड़ी है कि ईश्वर अंततः उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा। हमें आत्म-दया या निराशा की आत्म-केंद्रित अभिव्यक्तियों और प्रार्थनाओं के बीच अंतर करना चाहिए, जो उस व्यक्ति को निर्देशित की जाती हैं जिसके पास परिवर्तन लाने की शक्ति है। इसलिए, हमें यहाँ छिपने की ज़रूरत नहीं है; यह यहाँ हबक्कूक के बारे में बात करता है।

और इसलिए हम चाहते हैं कि हमारे सबसे करीबी लोग अपनी सच्ची भावनाओं को व्यक्त करें, भले ही उन्हें सुनना अच्छा न लगे, क्योंकि इससे अधिक आत्मीयता बढ़ती है। और इसलिए भगवान के सामने अपने विलाप, शिकायतें और याचिकाएँ लाना उसी तरह से काम करता है। और आप जानते हैं, आप कैसे, कैसे, आप जानते हैं, जब आप अपने सबसे करीबी रिश्ते के बारे में सोचते हैं, अगर आपके और आपके, आप जानते हैं, करीबी दोस्त या आपके जीवनसाथी के बीच किसी तरह का तनाव है, तो आप चाहते हैं कि वे उस शिकायत को आपके पास लेकर आएँ।

आप चाहते हैं कि यह संवादात्मक हो। यह वास्तव में बढ़ावा देता है एक तरह की आत्मीयता। और इसलिए यहाँ भजनों और विलाप की प्रार्थनाओं में, परमेश्वर चाहता है कि हम इस तरह की आत्मीयता को बढ़ावा देने के लिए इसे उसके सामने लाएँ, आप जानते हैं, चीजों को बंद करने के बजाय।

क्योंकि कई बार, जब आप अपने रिश्तों के बारे में सोचते हैं, अगर कोई समस्या है और आप उन करीबी रिश्तों में भी इसका समाधान नहीं करते हैं, तो कभी-कभी यह दरार भी लाता है। और यह जानते हुए कि यह उस तरह की अंतरंगता को बढ़ावा नहीं दे रहा है जो आप उस तरह से पा सकते हैं। तो यहाँ मैं अब वापस आना चाहता हूँ, और विलाप क्या नहीं है, इस पर कुछ बात करने के बाद, सांप्रदायिक या कॉर्पोरेट विलाप के बारे में थोड़ा और बात करना चाहता हूँ।

और इसलिए, यह यहाँ है, आप जानते हैं, यहाँ दूसरी तरह की शैली है जो समुदाय के साथ अधिक व्यवहार करती है जब समुदाय सामूहिक रूप से दर्द व्यक्त करता है। और इसलिए, सामुदायिक विलाप क्या है, और जब हम इस तरह से इसके बारे में सोचते हैं तो वे महत्वपूर्ण क्यों हैं? इसलिए यहाँ, जब हम सामुदायिक विलाप के बारे में सोचते हैं, तो हम भजन संहिता की पुस्तक में बहुत बार पाते हैं कि वे ऐसे समय के लिए लिखे गए हैं जब समुदाय एक साथ संघर्ष कर रहा होता है। और इसलिए, राष्ट्रीय संकट, प्राकृतिक आपदा, सैन्य हार के समय, कुछ ऐसा जो वे एक राष्ट्र या लोगों के समूह के रूप में सामूहिक रूप से यहाँ महसूस कर रहे हैं।

कभी-कभी ये विलाप यहाँ शोक के लिए किसी विशेष समारोह में सुनाए जाते थे, सामूहिक रूप से एक साथ सुनाए जाते थे। और मौजूद सामुदायिक विलापों की संख्या लगभग 12 से 23 तक है, उदाहरण के लिए कि लोग इसे किस तरह से चित्रित करते हैं और इन्हें इस तरह से वर्गीकृत करते हैं। और कुछ चीजें जो इनकी विशेषता बताती हैं, आप जानते हैं, कॉर्पोरेट या सामुदायिक, निश्चित रूप से यहाँ पहले व्यक्ति के बहुवचन रूपों का अधिक उपयोग किया जाता है।

तो यहाँ, व्यक्तिगत मैं या मुझे का उपयोग करने के बजाय, हम हम या हमें या हमारे समुदाय के बारे में बात कर रहे हैं, और हम इस से कैसे निपट रहे हैं। उन्हें दूसरे व्यक्ति के एकवचन रूपों में भी इस्तेमाल किया जाता है ताकि परमेश्वर को इस्राएल के साथ उसके रिश्ते की याद दिलाई जा सके। इसलिए हम पाते हैं कि इस सामुदायिक विलाप में वास्तव में, आप जानते हैं, परमेश्वर को सीधे संबोधित करते हुए, उसे उसके रिश्ते की याद दिलाते हुए, उसके लोगों के साथ उसके वाचा के रिश्ते की भी याद दिलाते हुए।

और इसलिए यहाँ आपने हमें अस्वीकार कर दिया है, भगवान, और हम पर टूट पड़े हैं, और आप क्रोधित हो गए हैं। अब हमें पुनर्स्थापित करें। और इसलिए यहाँ, हम इस तरह से सीधे भगवान से बात कर रहे हैं।

और इसलिए, सांप्रदायिक विलाप में एक केंद्रीय विशेषता ईश्वर और उसके लोगों के बीच के इतिहास का यह पूर्वाभ्यास है। इसलिए, बहुत बार, आप जानते हैं, उन तरीकों का हवाला देते हुए, जिनसे ईश्वर ने उद्धार लाया है, ईश्वर और उसके लोगों का इतिहास, लोगों की ओर से उनके द्वारा किए गए महान कार्य। और यह सब उस प्रेरणा के रूप में कार्य कर रहा है, आप जानते हैं, तत्व जिसे हमने पहले देखा था।

इसलिए परमेश्वर को प्रेरित करना कि वह कार्य करे और लोगों को जगाए, ताकि वह अपने लोगों को मुक्ति दिलाए। इसलिए सामुदायिक विलाप में आम तौर पर ये पाँच तत्व होते हैं जो हमें यहाँ मिलते हैं। फिर से, परमेश्वर को संबोधित करना, जो यहाँ दोनों के लिए समान है, आप जानते हैं, हे परमेश्वर, या, आप जानते हैं, निर्देशन की तरह, हम इस प्रार्थना को किसके लिए निर्देशित कर रहे हैं? और यह एक प्रार्थना भी है, यहाँ एक सामूहिक निकाय के रूप में सामुदायिक रूप से।

फिर भगवान पर आरोप लगाने वाले बयान या सवाल पूछे जाते हैं। इसलिए, यहाँ कई बार आप देखेंगे कि भगवान के सामने ऐसी शिकायतें या इस तरह के आरोप लगाने वाले बयान या सवाल ज़्यादा उठाए जाते हैं। आप जानते हैं, आपने हमें हमेशा के लिए क्यों नकार दिया? और फिर दुर्भाग्य या समुदाय के अनुभव पर विलाप।

कभी-कभी यह राजनीतिक प्रकृति का होता है, जैसा कि समुदाय के लोग इस तरह से अनुभव कर रहे हैं। और फिर दुर्भाग्य से निपटने के लिए यहोवा से प्रार्थना की जाती है। इसलिए, परमेश्वर से कुछ करने और उससे निपटने के लिए प्रार्थना की जाती है और परमेश्वर द्वारा उस पर कार्य करने के लिए कारण या प्रेरणाएँ भी मांगी जाती हैं।

और जैसा कि मैंने यहाँ कहा, ये सभी तत्व हर एक सांप्रदायिक विलाप में समान नहीं होंगे, लेकिन ये कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें विद्वानों ने इस तरह से देखा है। तो सांप्रदायिक या कॉर्पोरेट विलाप क्यों

महत्वपूर्ण है? मुझे लगता है कि सबसे पहले क्योंकि हम सभी सार्वभौमिक रूप से दर्द को समझते हैं। और इसलिए दुख और शोक, दुख, कभी-कभी, व्यक्तिगत व्यक्ति से परे हो जाता है।

इसलिए, यह सिर्फ हम ही नहीं हैं जो इन चीजों का अनुभव करते हैं। कभी-कभी इसका अनुभव पूरे समुदाय द्वारा किया जाता है। और, आप जानते हैं, पाप सिर्फ हमें ही प्रभावित नहीं करता।

कभी-कभी यह पूरे समुदाय और हमारे आस-पास के लोगों को प्रभावित करता है। और इसलिए, यह सिर्फ एक व्यक्ति या संस्कृति या जाति तक सीमित नहीं है। और इसलिए, हम सभी इन भावनाओं का अनुभव करते हैं, और कभी-कभी परिस्थितियाँ सिर्फ हमें ही नहीं, बल्कि पूरे समुदाय को सामूहिक रूप से प्रभावित करती हैं।

और यहाँ नए नियम में जो हम पाते हैं वह महत्वपूर्ण है क्योंकि हम एक चर्च के रूप में मसीह के शरीर के रूप में सोचते हैं, कि प्रथम कुरिन्थियों में, यह कहा गया है कि यदि एक अंग पीड़ित होता है, तो हर अंग उसके साथ पीड़ित होता है। और इसलिए यहाँ, हमारे भाइयों और बहनों के साथ खड़े होना जो दर्द और पीड़ा से जूझ रहे हैं, महत्वपूर्ण है। और शास्त्र हमें ऐसा करने के लिए कहता है, खड़े होने और इसके साथ पीड़ित होने के लिए।

तो, एक स्वीडिश कहावत है जो मुझे लगता है कि यहाँ मददगार है। इसमें कहा गया है कि साझा की गई खुशी दोगुनी खुशी है और साझा किया गया दुख आधा दुख है। और इसलिए, आप जानते हैं, यह कहावत आपको कैसे प्रभावित करती है? सोचिए, जब हम साझा करते हैं, तो आप जानते हैं, एक खुशी, हम दूसरों के साथ साझा करना चाहते हैं क्योंकि वास्तव में यह हमारी खुशी को बढ़ाता है।

इससे हमारी खुशी दोगुनी हो जाती है। और जब हम एक दूसरे के साथ अपने दुख साझा करते हैं, तो यह बोझ हल्का कर देता है। हमारे साथ कोई और भी होता है जो उस बोझ को हमारे साथ उठा रहा होता है।

और इसलिए यहाँ, सामुदायिक विलाप के महत्व को पहचानते हुए, हम मसीह में अपने भाइयों और बहनों के साथ इस तरह से खड़े हैं। इसलिए दुख की बात है कि आज, हम नहीं जानते कि उन लोगों के साथ कैसे पहचान की जाए जो पीड़ित हैं। मैं चाहता हूँ कि हम एक चर्च के रूप में बेहतर काम कर सकें।

हम नहीं जानते कि दूसरों की तरफ से कैसे खड़े हों। और शायद कई बार, हम अपने जीवन के बारे में चिंतित होते हैं, और हम ज़रूरी नहीं कि उन लोगों को देखें जो हमारे आस-पास पीड़ित हैं। और इसलिए, आप जानते हैं, हम जानबूझकर ये काम नहीं करते हैं, लेकिन शायद हम इतने आत्म-अवशोषित होते हैं या अपने बारे में सोचते हैं कि हम वास्तव में महसूस नहीं करते हैं, आप जानते हैं, जो हमारे आस-पास पीड़ित हैं।

और इसलिए यह सवाल है, आप जानते हैं, फिर से, ऐसा क्यों है कि जब लोग दुखी होते हैं, तो वे चर्च में जाना ही नहीं चाहते? और इसलिए, बहुत बार, आप जानते हैं, मैं ऐसे लोगों को सुनता हूँ जो कहते हैं, मुझे नहीं लगता कि मैं चर्च जाने के लिए तैयार हूँ। मैं आज चर्च जाने के लिए तैयार

हूँ। जैसे, इसका क्या मतलब है? जैसे, क्या आपको चर्च जाने के लिए तैयार होना पड़ता है ? या, आप जानते हैं, जब आप दुखी होते हैं और जब आप बहुत सी चीज़ों से निपट रहे होते हैं, तो आपको मुख्य रूप से उस समय जाना चाहिए।

और इसलिए, इसमें बदलाव की जरूरत है। इसलिए, हमें ऐसे लोग बनने की जरूरत है जो पीड़ित लोगों के साथ खड़े हो सकें, और हमें सुनना और अनिश्चितता में बैठना, सच्चाई और प्रेम बोलना, और मंत्रालय की इस उपस्थिति के माध्यम से प्रेम करना सीखना होगा। और इसलिए यहां, यहां तक कि मौजूद होने पर भी, भले ही आपके पास कहने के लिए शब्द न हों, अपने साथी भाइयों और बहनों के दर्द को इस तरह से देखने और देखने में सक्षम होने के लिए।

और इसलिए यहाँ, यह बाइबिल के विलाप का एक संक्षिप्त परिचय मात्र है। और हमारे अगले पाठ में, हम कुछ अन्य विषयों को भी कवर करेंगे। मेरी पुस्तक में इस पर चर्चा की गई है।

धन्यवाद। यह डॉ. मे यंग हैं, जो बाइबिल विलाप का परिचय, सत्र 1 पर अपना अध्यापन दे रही हैं।